परमार्थसार

आचार्य अभिनवगुप्तपादप्रणीत एवम् शैवाचार्य श्रीयोगराजकृत संस्कृत वृत्ति

> सम्पादन एवं हिन्दी रूपान्तरण प्रो० नीलकंठ गुर्दू

पेनमैन पब्लिशर्स

दिल्ली (भारतवर्ष)

विषयानुक्रम

विषय	-0 .	
	कारिकांक	पृष्ठ
पूर्वावलोकन		(v)
ग्रन्थकार का मंगलाचरण	÷.	₹-6
शास्त्र का अवतार, उपोद्घातीय	7-3	6-83
अंडचौके के आकारवाला विश्व परमेश्वर की		0-11
स्वातन्त्र्यशक्ति का ही बहिरंग विकास	8	27-20
अंडचतुष्टय में भोक्त और भोग्य का स्वरूप	q	80-53
विश्व की प्रतिबिम्बरूपता	E-8	23-88
विश्व के आधार परतत्त्व का स्वरूप	80-88	88-80
अभेदवाद की स्थापना	88-83	86-48
राद्धाध्व के पाँच तत्त्वों का विकास	88	48-80
गयातत्त्व का स्वरूप	१५	६१-६३
रुषतत्त्व का स्वरूप	38	६३-६६
हंचुकषट्क का विकास और अंतरंगता	१७	EE-190
तंचुकषट्क की शुद्धि का उपाय	28	90-92
कृति और तीन अंत:करण	88	७३-७४
ांच ज्ञानेन्द्रिय और पांच कर्मेन्द्रियों का विकास	२०	98-94
चि तन्मात्र	२१	७५-७६
च महाभूत	22	७६-७८
धानिक कंचुक का आवरण	23	66-60
ावरण के तीन रूप		60-68
ावरण के प्रभाव से भेदबुद्धि का विकास	24	62-63

विषय	कारिकांक	पृष्ठ
जाग्रत् आदि अवस्था भेदों में एक ही		
चैतन्यमहेश्वर की व्यापकता	२६	68-64
छ: परस्परभिन अवस्थाओं की अयथार्थता	२७	८६-९१
भ्रान्ति में असत् अर्थ के प्रतिभास की अपार क्ष	मता २८	97-93
माया से जनित मोहात्मकता की सर्वाङ्गीण व्याप	कता २९	98-94
भ्रान्ति का उद्भव	30	९६-९८
अनात्मा शरीर, प्राण इत्यादि पर आत्म-अभिमान	उत्पन्न	
होने का मूलकारण भान्ति ही है	38	96-800
शिव का स्वयं ही स्वरूप को भ्रान्ति में जकड़	ने	
का प्रकार	32	१००-१०४
शिव का स्वातन्त्र्य ही भ्रान्ति के बंधन में डाल	ने और	
उससे मुक्त करने की क्रीड़ा का मूलकारण	ा है ३३	808-808
तुरीयाभाव का स्वरूपनिर्धारण	38	206-220
जाग्रत्, स्वप्न, सुषुप्ति के विषय में वेदान्त का		१११-११८
दृष्टिकोण और उनमें तुरीया की अनुस्यूतत	ा ३५	
सारे प्राणिवर्ग में अनुस्यूत होने पर भी परम-पु	रुष की	११८-१२०
मलहीनता	38	
विशुद्ध चिन्मात्र होने पर भी जीवों में सुख, दु	:ख आदि	१२१-१२४
अवस्थाओं का भेद क्यों?	₹9	
परतत्त्व में सुखिता, दु:खिता इत्यादि का अभाव	व ३८	१२४-१२५
स्वात्ममहेश्वर स्वयं ही ज्ञप्ति के द्वारा भ्रान्ति क	<u></u>	१२५-१२७
निवारण करने में स्वतन्त्र है	39	
उत्कृष्ट योगी की कृतकृत्यता	80	१२८-१२९
अमृतबीज का उद्धार और पूर्ण तन्मयीभाव		230-285
की अवस्था	88-84	
फिर पांच ईश्वरीय शक्तियों के बहिर्मुखीन प्रस		
अनुसार बाहरी विश्व की सृष्टि	88	
बहिरंगरूप में विश्व के उल्लासन और अंतरंग	रूप	१४४-१५
में विलयन की विमर्शमयी क्रीड़ा ही अह		
परमेश्वरता का रहस्य	89-40	,
परमञ्जरात की रहरन	-	

योगी की परब्रहास्वरूपता सिद्धयोगी के लिए द्वन्द्वों को भी ब्रह्मरूपता ब्रह्मज्ञानी के परिप्रेक्ष्य में कर्मफलों की नि:सारता अख्याति से ही जन्म-मरण ज्ञान प्राप्ति से कर्मफलों का नाश ज्ञानी के लिए संसारभाव की प्रभावहीनता मुक्ति का स्वरूप जीवन्मुक्ति जीवन्मुक्ति जीवन्मुक्ति के संदर्भ में कर्मों की फलवत्ता का अभाव ६२ १७४-१७४ बार बार जन्म-मरण का कारण आत्म-परिचय का फल जीवन्मुक्ति को अविशष्ट जीवन-व्यवहार ज्ञानप्राप्ति के विषय में अधिकारिता का अभाव तानी के लिए मृत्युस्थान का निर्णय पुक्त आत्म का स्वरूप पुक्त आत्म का स्वरूप पुक्त आत्म का स्वरूप नेजी मानसिक संस्कारों से ही स्वर्ग, नरक इत्यादि की प्राप्ति की प्राप्ति नेजी वासनाओं के अनुसार मरणोपरान्त गति तो श्रारूपता विष्र शक्तिपत विष्र श	विषय	कारिकांक	पृष्ठ
सिद्धयोगी के लिए द्वन्द्वों की भी ब्रह्मरूपता ब्रह्मज्ञानी के परिप्रेक्ष्य में कर्मफलों की नि:सारता अख्याति से ही जन्म-मरण ज्ञान प्राप्ति से कर्मफलों का नाश ज्ञान प्राप्ति के लिए संसारभाव की प्रभावहीनता प्रमुक्ति का स्वरूप जीवन्मुक्ति जीवन	योगी की परब्रह्मस्वरूपता		
अख्याति से ही जन्म-मरण ज्ञान प्राप्ति से कर्मफलों का नाश प्रकृति के लिए संसारभाव की प्रभावहीनता पृक्ति का स्वरूप जीवन्मुक्ति जीवन्मुक्ति जीवन्मुक्ति के संदर्भ में कर्मों की फलवत्ता का अभाव ६२ १७४-१७४ ज्ञार बार जन्म-मरण का कारण ज्ञारम-परिचय का फल जीवन्मुक्त का अवशिष्ट जीवन-व्यवहार ज्ञानप्राप्ति के विषय में अधिकारिता का अभाव ८२ २८५-२२५ ज्ञानप्राप्ति के विषय में अधिकारिता का अभाव ८२ २८५-२२५ ज्ञानी के लिए मृत्युस्थान का निर्णय ८३-८४ २२७-२३७ पुक्त आत्म का स्वरूप थेनिसंवेदन का रूप रेप-८६ २३७-२४० नेजी मानसिक संस्कारों से ही स्वर्ग, नरक इत्यादि की प्राप्ति वेजी वासनाओं के अनुसार मरणोपरान्त गति तेजी वासनाओं के अनुसार मरणोपरान्त गति तेज शक्तिपात पर १६२-२६२ तेज शक्तिपात पर १६२-२६२ तेज शक्तिपात पर १६२-२६२ तेज अपसंहार १८-१०२ २६४-२७१	सिद्धयोगी के लिए द्वन्द्वों की भी ब्रह्मरूपता	4	
अख्याति से ही जन्म-मरण प्रश्नि सं कर्मफलों का नाश प्राप्ति से कर्मफलों का नाश प्रमुक्त का स्वरूप स्वरूप सं १७२-१७४ हु १७८-१७४ हु १७८-१०४ हु १८८-१०४ हु १८	ब्रह्मज्ञानी के परिप्रेक्ष्य में कर्मफलों की नि:सारत		
ज्ञान प्राप्ति से कर्मफलों का नाश ज्ञानी के लिए संसारभाव की प्रभावहीनता मुक्ति का स्वरूप जीवन्मुक्ति जीवन्मुक्ति जीवन्मुक्ति को संदर्भ में कमों की फलवत्ता का अभाव ६२ १७४-१७४ बार बार जन्म-मरण का कारण आत्म-परिचय का फल जीवन्मुक्त का अविशष्ट जीवन-व्यवहार ज्ञानमुक्ति के लिए मृत्युस्थान का निर्णय पुक्त आत्म का स्वरूप प्रभावने के लिए मृत्युस्थान का निर्णय पुक्त आत्म का स्वरूप वेजी मानसिक संस्कारों से ही स्वर्ग, नरक इत्यादि की प्राप्ति की प्राप्ति की अनुसार मरणोपरान्त गति पुर्वे १४६-२५४ विज्ञ शक्तिपात वि शक्तिपात	अख्याति से ही जन्म-मरण		
हानी के लिए संसारभाव की प्रभावहीनता पुक्ति का स्वरूप जीवन्मुक्ति जीवन्मुक्ति जीवन्मुक्ति जीवन्मुक्ति के संदर्भ में कमों की फलवत्ता का अभाव ६२ १७४-१७४ वार बार जन्म-मरण का कारण आत्म-परिचय का फल जीवन्मुक्त का अवशिष्ट जीवन-व्यवहार विच्याने के लिए मृत्युस्थान का निर्णय प्रन्ति आत्म का स्वरूप प्रन्ति आत्म का स्वरूप प्रजानी के लिए मृत्युस्थान का निर्णय प्रन्ट २४८-२४४ निर्णामिसंवेदन का रूप प्रजानिसंक संस्कारों से ही स्वर्ग, नरक इत्यादि की प्राप्ति जी वासनाओं के अनुसार मरणोपरान्त गति प्रन्ट २४६-२५४ निर्णामिसंवेदन का स्वरूप और आगामी दशा प्रन्तिपात विच्याक्तिपात पर्वेदन का स्वरूप और आगामी दशा पर्वेदन का स्वरूप और आगामी दशा पर्वेदन २६४-२७१ विच्याक्तिपात परविच्याक्तिपात	ज्ञान प्राप्ति से कर्मफलों का नाश		
मुक्ति का स्वरूप जीवन्मुक्ति जीवन्मुक्ति जीवन्मुक्ति जीवन्मुक्ति के संदर्भ में कर्मों की फलवत्ता का अभाव ६२ १७४-१७४ वार बार जन्म-मरण का कारण आत्म-परिचय का फल जीवन्मुक्ति को अविशिष्ट जीवन-व्यवहार हानप्राप्ति के विषय में अधिकारिता का अभाव तानी के लिए मृत्युस्थान का निर्णय त्रिक्त आत्म का स्वरूप त्रिक्ति मानसिक संस्कारों से ही स्वर्ग, नरक इत्यादि की प्राप्ति की प्राप्ति की जासनाओं के अनुसार मरणोपरान्त गति प०-९३ २४६-२५४ तोनी और अज्ञानी दोनों का मृत्युक्षण समान विष्ठ शिक्तिपात	ज्ञानी के लिए संसारभाव की प्रभावहीनता		
जीवन्मुक्ति के संदर्भ में कर्मों की फलवत्ता का अभाव ६२ १७४-१७४ वार बार जन्म-मरण का कारण ६३ १७५-१७४ वार बार जन्म-मरण का कारण ६३ १७५-१७४ वार बार जन्म-मरण का कारण ६३ १७५-१७४ वार बार जन्म-मरण का कारण ६४-६८ १७८-१८९ जीवन्मुक्त का अविशष्ट जीवन-व्यवहार ६९-८१ १८९-२२५ वानप्राप्ति के विषय में अधिकारिता का अभाव ८२ २२५-२२७ तानी के लिए मृत्युस्थान का निर्णय ८३-८४ २२७-२३७ तुक्त आत्म का स्वरूप ८५-८६ २३७-२४० तेजी मानसिक संस्कारों से ही स्वर्ग, नरक इत्यादि की प्राप्ति ८९ २४४-२४६ वानी और अज्ञानी दोनों का मृत्युक्षण समान १४-९५ २५४-२५९ तोच शक्तिपात १६ २६०-२६२ वानी और अज्ञानी दोनों का मृत्युक्षण समान १४-९५ २५४-२५९ तोच शक्तिपात १६ २६०-२६२ वानी प्राप्ति १० २६२-२६४ तोग श्री अग्रामी दशा १८-१०२ २६४-२७१ वानी अग्री अग्रसंहार १०३ २७१-२७३	मुक्ति का स्वरूप		
जीवन्मुक्ति के संदर्भ में कमों की फलवत्ता का अभाव ६२ १७४-१७४ वार बार जन्म-मरण का कारण आत्म-परिचय का फल जीवन्मुक्त का अविशष्ट जीवन-व्यवहार जीवन्मुक्त का अविषय में अधिकारिता का अभाव तानी के लिए मृत्युस्थान का निर्णय त्रिक्त आत्म का स्वरूप प्रेक्त आत्म का स्वरूप प्रेजिंग मानसिक संस्कारों से ही स्वर्ग, नरक इत्यादि की प्राप्त विज्ञ वासनाओं के अनुसार मरणोपरान्त गति तो वासनाओं के अनुसार मरणोपरान्त गति वासनाओं के वासनाओं	जीवन्मुक्ति		
बार बार जन्म-मरण का कारण आतम-परिचय का फल जीवन्मुक्त का अविशष्ट जीवन-व्यवहार हानप्राप्ति के विषय में अधिकारिता का अभाव तानी के लिए मृत्युस्थान का निर्णय त्रिक्त आत्म का स्वरूप तोगिसंवेदन का रूप विजी मानसिक संस्कारों से ही स्वर्ग, नरक इत्यादि की प्राप्ति की प्राप्ति की अनुसार मरणोपरान्त गति तानी और अज्ञानी दोनों का मृत्युक्षण समान त्रिक्त शक्तिपात देश रहन-रहर तेषि शक्तिपात त्रिक्त शक्तिपात त्रिक्त स्वरूप और आगामी दशा प्र-१०२ २६४-२७१ १०३ २७१-२७३	जीवन्मुक्ति के संदर्भ में कर्मों की फलवत्ता का	अभाव ६३	१ १७४-१७५
अत्म-परिचय का फल जीवन्मुक्त का अवशिष्ट जीवन-व्यवहार जीवन्मुक्त का अवशिष्ट जीवन-व्यवहार जीवन्मुक्त का अवशिष्ट जीवन-व्यवहार जीनप्राप्ति के विषय में अधिकारिता का अभाव ८२ २२५-२२७ तानी के लिए मृत्युस्थान का निर्णय ८३-८४ २२७-२३७ तक्त आत्म का स्वरूप ८५-८६ २३७-२४० तेजी मानसिक संस्कारों से ही स्वर्ग, नरक इत्यादि की प्राप्ति तकी प्राप्ति ८९ २४४-२४६ तेजी वासनाओं के अनुसार मरणोपरान्त गति ९०-९३ २४६-२५४ तोवी और अज्ञानी दोनों का मृत्युक्षण समान १४-९५ २५४-२५९ तोव शक्तिपात १५ २६०-२६२ तोव शक्तिपात १५ २६०-२६२ तोव शक्तिपात १५ २६०-२६४ तोव शक्तिपात १५ २६०-२६४ तोव शक्तिपात १५ २६०-२६४	बार बार जन्म-मरण का कारण		
जीवन्मुक्त का अवशिष्ट जीवन-व्यवहार ह ९-८१ १८९-२२५ तानप्राप्ति के विषय में अधिकारिता का अभाव ८३-८४ २२७-२३७ तानी के लिए मृत्युस्थान का निर्णय ८३-८४ २२७-२३७ तुक्त आत्म का स्वरूप ८५-८६ २३७-२४० तेजी मानसिक संस्कारों से ही स्वर्ग, नरक इत्यादि की प्राप्ति तेजी वासनाओं के अनुसार मरणोपरान्त गति १०-९३ २४६-२५४ तेजी वासनाओं के अनुसार मरणोपरान्त गति १४-९५ २५४-२५९ तोत्र शक्तिपात १६ २६०-२६२ तेष शक्तिपात १६ २६०-२६२ तेष शक्तिपात १६ २६०-२६२ तेष शक्तिपात १८-१०२ २६४-२७१ तेष का उपसंहार १०३ २७१-२७३	आत्म-परिचय का फल		
तानप्राप्ति के विषय में अधिकारिता का अभाव तानी के लिए मृत्युस्थान का निर्णय तुक्त आत्म का स्वरूप तोगिसंवेदन का रूप तेजी मानसिक संस्कारों से ही स्वर्ग, नरक इत्यादि की प्राप्ति की प्राप्ति विषय में अधिकारिता का अभाव ८३-८४ २२७-२३७ ८५-८६ २३७-२४० ८५-८८ २४०-२४४ तेजी मानसिक संस्कारों से ही स्वर्ग, नरक इत्यादि की प्राप्ति ८९ २४४-२४६ तेजी वासनाओं के अनुसार मरणोपरान्त गति १०-९३ २४६-२५४ तानी और अज्ञानी दोनों का मृत्युक्षण समान तेष्व शक्तिपात १६ २६०-२६२ तेष शक्तिपात १५ २६२-२६४ तेष भाषान १८-१०२ २६४-२७१ तेष का उपसंहार १०३ २७१-२७३	जीवन्मुक्त का अवशिष्ट जीवन-व्यवहार		
तानी के लिए मृत्युस्थान का निर्णय पुक्त आत्म का स्वरूप प्रित्त आत्म का स्वरूप प्रित्त आत्म का स्वरूप प्रित्त आत्म का स्वरूप प्रित्त का रूप तेजी मानसिक संस्कारों से ही स्वर्ग, नरक इत्यादि की प्राप्त पर २४४-२४६ नेजी वासनाओं के अनुसार मरणोपरान्त गति पर २४४-२५४ नेजी वासनाओं के अनुसार मरणोपरान्त गति पर २४४-२५४ नेजी वासनाओं के अनुसार मरणोपरान्त गति ए०-९३ २४६-२५४ नेजी वासनाओं के अनुसार मरणोपरान्त गति ए०-९३ २४६-२५४ नेजी वासनाओं के अनुसार मरणोपरान्त गति ए०-९३ २४६-२५४ नेजी वासनाओं के अनुसार मरणोपरान्त गित ए०-९३ २४६-२५४ नेजी वासनाओं के अनुसार मरणोपरान्त गित ए०-९३ २४६-२५४ १८-१०२ २६४-२७१ विक्र शिक्ष शिक्ष शिक्ष समान एठ-१०२ २६४-२७१ विक्र शिक्ष समान			
पुक्त आत्म का स्वरूप प्रोगिसंवेदन का रूप तेजी मानसिक संस्कारों से ही स्वर्ग, नरक इत्यादि की प्राप्ति की प्राप्ति तेजी वासनाओं के अनुसार मरणोपरान्त गति श्रुक्षण समान विश्व शक्तिपात दि शक्तिपात विश्व स्वरूप और आगामी दशा रूप का उपसंहार	तानी के लिए मृत्युस्थान का निर्णय		
प्रोगिसंवेदन का रूप तेजी मानसिक संस्कारों से ही स्वर्ग, नरक इत्यादि की प्राप्ति तेजी वासनाओं के अनुसार मरणोपरान्त गति तोनी और अज्ञानी दोनों का मृत्युक्षण समान विव्र शक्तिपात विद्र शक्तिपात	नुक्त आत्म का स्वरूप		
तेजी मानसिक संस्कारों से ही स्वर्ग, नरक इत्यादि की प्राप्ति तेजी वासनाओं के अनुसार मरणोपरान्त गति तोनी और अज्ञानी दोनों का मृत्युक्षण समान तेष्ठ शक्तिपात तेष्ठ शक्तिपात तेष्ठ शक्तिपात तेष्ठ का स्वरूप और आगामी दशा तेष्ठ का उपसंहार तेष्ठ का उपसंहार तेष्ठ विष्ठ स्वर्ग न्युक्षण समान तेष्ठ विष्ठ स्वरूप और आगामी दशा तेष्ठ का उपसंहार	पोगिसंवेदन का रूप		
की प्राप्ति ८९ २४४-२४६ नेजी वासनाओं के अनुसार मरणोपरान्त गति ९०-९३ २४६-२५४ तानी और अज्ञानी दोनों का मृत्युक्षण समान ९४-९५ २५४-२५९ तेव्र शक्तिपात ९६ २६०-२६२ तेव शक्तिपात ९७ २६२-२६४ तेगभ्रष्ट का स्वरूप और आगामी दशा ९८-१०२ २६४-२७१ थ का उपसंहार १०३ २७१-२७३	नजी मानसिक संस्कारों से ही स्वर्ग, नरक इत्य	दि	100
नेजी वासनाओं के अनुसार मरणोपरान्त गति १०-९३ २४६-२५४ तानी और अज्ञानी दोनों का मृत्युक्षण समान १४-९५ २५४-२५९ तिव्र शक्तिपात १६ २६०-२६२ तंद शक्तिपात १७ २६२-२६४ तोगभ्रष्ट का स्वरूप और आगामी दशा १८-१०२ २६४-२७१ थ का उपसंहार १०३ २७१-२७३			388-588
तानी और अज्ञानी दोनों का मृत्युक्षण समान १४-९५ २५४-२५९ वित्र शक्तिपात १६ २६०-२६२ वंद शक्तिपात १७ २६२-२६४ वोगभ्रष्ट का स्वरूप और आगामी दशा १८-१०२ २६४-२७१ थि का उपसंहार १०३ २७१-२७३	नजी वासनाओं के अनुसार मरणोपरान्त गति		
तिव्र शक्तिपात १६ २६०-२६२ iद शक्तिपात १७ २६२-२६४ iोगभ्रष्ट का स्वरूप और आगामी दशा १८-१०२ २६४-२७१ iथ का उपसंहार १०३ २७१-२७३		98-94	248-248
iद शक्तिपात १७ २६२-२६४ ोगभ्रष्ट का स्वरूप और आगामी दशा १८-१०२ २६४-२७१ iथ का उपसंहार १०३ २७१-२७३			
ोगभ्रष्ट का स्वरूप और आगामी दशा ९८-१०२ २६४-२७१ थि का उपसंहार १०३ २७१-२७३	दं शक्तिपात		
थ का उपसंहार १०३ २७१-२७३	गेगभ्रष्ट का स्वरूप और आगामी दशा		
- N	थ का उपसंहार		
	लोकानुक्रमणी	7.4	10 miles 10 miles